गौहाटी ज्ञानशाला पहुंची आचार्य महाप्रज्ञ के चरणों में

संस्कारी बालक ही सुखी परिवार का आधार : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं 26, जुलाई।

''युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि बाल पीढी में संस्कार निर्माण किया जाये तो सुखी परिवार का सपना साकार हो सकता है। संस्कारी बालक सुखी परिवार का आधार है।''

उक्त विचार उन्होंने जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में गुवाहाटी से समागत ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओं एवं जन समुदाय को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। ज्ञानशाला के गुरुदर्शन यात्रा के प्रायोजक बिमलकुमार नाहटा एवं आंचलिक संयोजक विजयसिंह चौरड़िया के नेतृत्व में 70 व्यक्तियों का संघ उपस्थित हुआ।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जो माता-पिता अपने पुत्र को संस्कारी नहीं बनाते हैं उन्हें साहित्य जगत में शत्रु कहा गया है। उन्होंने ज्ञानशाला को संस्कार निर्माण का सशक्त माध्यम बताते हुए कहा कि ज्ञानशाला के साथ बच्चों को जोड़ने वाले कार्यकर्त्ता, अभिभावक प्रशिक्षक साधुवाद के पात्र हैं। उन्होंने बालकों को सरलता अपनाने की प्रेरणा देते हुए कहा कि सत्य को जीवन में लाने के लिए सरलता जरूरी है। सरलता के अभाव में सत्य प्राप्त नहीं हो सकता।

कार्यक्रम में ज्योति सुराना, हितेश चौपड़ा, शुभम पुगलिया, कोमल सेठिया, स्वाति संचेती, श्रद्धा बोथरा ने लघु नाटिका के द्वारा ज्ञानशाला की उपयोगिता एवं तेरापंथ के प्रबुद्ध साधु-साध्वियों श्रावक-श्राविकाओं के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। ललिता श्यामसुखा, विजयसिंह चौरड़िया ने गीत की प्रस्तुति दी। इस मौके पर तेरापंथ सभा गुवाहाटी की तरफ से प्रायोजक सरदारशहर निवासी गुवाहाटी प्रवासी बिमल कुमार नाहटा का आभार जताया।